११५. अखण्डता, सार्वभौमता को मानव स्वीकारता है

१५-१२-२०१३

मानव का यह तथ्य को सर्वेक्षण विधि से जाँचा गया | बच्चे, बड़े, बूढ़े ये तीनों इसे स्वीकारते हैं | आचरण में लाने में वृद्धों में अति कष्ट और बड़ों में सामान्य कष्ट, युवाओं में उत्साह, बच्चों में स्वीकार्य | ये पद्धति को वी.आई.पी. में चल रहा अभिभावक स्कूल, उसमें शुरू कक्षा के विद्यार्थियों को पढाया जाता है | उनको देखने पर यह पता लगता है | उसी के साथ युवा, बच्चे, बड़े, बूढ़े सबका सर्वेक्षण ज्ञान हासिल किये | इसके बाद ही आपको कहा जा रहा है | अभी तक जो हमारा स्वीकृतियां हैं उसके स्थान पर और बदलाव की आवश्यकता हो, अवश्य सूचना दें | इन स्वीकृतियों के आधार पर लेख लिखा जा रहा है अर्थात उक्त स्वीकृतियों के साथ ये लेख लिखा जा रहा है | स्वीकृतियां अपने में महत्त्वपूर्ण होता ही है | एक दूसरे के लिये सूचना होता है | सूचना में कठिनाइयों को दूर करना हर व्यक्तियों का काम है | मेरे अनुसार हर मानव अच्छाई चाहता है | इसको ऐसा भी कहा जा सकता है; चोर, डाकू रूपजीवी ये सभी अच्छाईयां चाहते हैं |

बाकी तो चाहते ही हैं | इस क्रम में यदि सोचा जाय, मानव शुभ चाहने वाला है | मानव जात शुभ के पक्ष में सोचना चाहता है, समझना चाहता है, प्रमाणित करना चाहता है | इस विधि से यदि हम संसार को देखें, हम आगे बढ़ सकते हैं | अन्यथा समस्याजनक व्यापार में लग जाएंगे | इस प्रकार मनुष्य अपने को निश्चय करने से ये सुझाव आपके सामने है लेखों के रूप में | लेख एक सूचना है, जीना हर व्यक्ति को है अर्थात समझदारी से जीने से है | समझदारीपूर्वक जीने से मानव अपने लक्ष्य को पूरा कर सकता है | मानव लक्ष्य सुख है | हर मानव सुखी ही होना चाहता है | सुखी होने के लिये शुभ सोच, शुभ समझ, शुभ कार्य-व्यवहार करना ही होगा | यही सार्वभौम व्यवस्था के लिये आवश्यक है | व्यवस्था एक ही होगा मानव जाति का, समाज एक ही होगा | समझ एक होने के आधार पर, अखण्ड होने के आधार पर मानव जाति एक होना समझना आवश्यक है | यह आहार, विहार, व्यवहार के आधार पर बनता है | मानव का आहार शाकाहारी है | मानव का शरीर का व्यवस्था शाकाहारी है | इसका तीन मुद्दा हुआ, तीन आधार हुआ |

पहला आधार है खाना पीना, दूसरा आधार हुआ व्यवहार, तीसरा आधार हुआ विहार | इस प्रकार का तीनों आधारों पर मानव का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मानव शाकाहरी है | जागृति के साथ विहार और व्यवहार सार्थक होता है | जागृति, विकसित चेतना ही है | विकसित चेतना का शुरुआत मानव चेतना से है | मानव चेतना अभी तक आया नहीं व्यवहार में | भाषा में कहीं कहीं होगा तो होगा, व्यवहार में तो नहीं आया | क्योंकि इसका गवाही, पूरा धरती पर सौ से अधिक राज्यों, हर राज्य के साथ अपना अपना संविधान है | हर संविधान के साथ सुप्रीम कोर्ट हुआ, सुप्रीम कोर्ट के विद्वानों को अर्थात न्यायाधीशों को सर्वोपरि विद्वान माना गया | इसके वावजूद अभी तक न्याय का पता नहीं | इस गवाही से यह पता लगता है कि मानव न्याय के प्रति कम ध्यान दिया है | ध्यान देना आवश्यक है | इस क्रम में मानव अपने को समझने की आवश्यकता शेष रहा है | पढाई विधि से आदर्शवाद रहस्य के मारे लोकव्यापीकरण नहीं हुआ |

भौतिकवाद लोकव्यापी होते हुये अपराध और गलतियों से मुक्त नहीं हुआ | दूसरा भाषा में अपराध और भ्रम से मुक्त नहीं हुआ | इस क्रम में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मानव को अपना समझ को पूरा होने में विकसित चेतना, मानव

चेतना को पहचानना आवश्यक है | मानव चेतना को पहचानने के क्रम में विकल्प को समझना आवश्यक है | 'विकल्प' को यदि छोड़ देते हैं, यह वस्तु मिलेगा नहीं | विकल्प का तात्पर्य है परम्परा का ज्ञान एवं आचरण में विकल्प | भौतिकवाद एवं आदर्शवाद का विकल्प | भारत वर्ष में अनेकों दर्शन, शास्त्र, वेद, उपनिषद् हुए | परन्तु उनमें यह विकल्पात्मक वस्तु नहीं मिलता | कहीं कहीं भाषा एवं कल्पना आवश्य दिए हैं | विकसित चेतना नहीं मिलता | सहअस्तित्व नहीं मिलता | सहअस्तित्व में विकासक्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति का स्वरूप, गठन, क्रिया एवं आचरणपूर्णता का स्वरूप नहीं मिलता है | विकल्प के अनंतर श्रेष्ठता के लिये प्रयत्न किया जा सकता है | इस क्रम में मानव अपने को पहचान सकता है, कमियों के बारे में | कमियां समझ में आने से पूरा करने की इच्छा होना स्वाभाविक है | उसी क्रम में विकल्प तैयार हुआ है | विकल्प के आधार पर भौतिकवाद, आदर्शवाद में जो कमियां हुई उसको पूरा कर सकते हैं, उसको सुधार सकते हैं |

पूरा करने से, सुधार करने से यह पता चलता है, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का ज्ञान होता है, यह प्रमाणित होता है | इसी का दूसरा भाषा में कार्यरूप-व्यवहार प्रमाण, , विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण, के रूप में प्रमाणित होता है | इसे अच्छी तरह से परिशीलन किया गया है, जी के देखा है, जिया जा सकता है; हर व्यक्ति जी सकता है | इस बुनियादी आधार पर ध्यान देना आवश्यक है | हम यदि ठीक से ध्यान देते हैं तब पता लगता है, मानव का कमी कहाँ है | मानव कहीं न कहीं भौतिकवाद में फंसा है | भौतिकवाद अपराधों का पुलिंदा है | अपराध और भ्रम का पुलिंदा है | इस विधि से हम यह निश्चय कर सकते हैं कि अपराध और भ्रम मानव के लिये हानिकर हैं | मानव जाति के लिये हानिकर हैं | फलस्वरूप विकल्प को देख सकते हैं | विकल्प में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण हैं | शीर्ष कोटि के प्रमाण यही है | दूसरा प्रमाण नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूप में हैं; जिससे मानव चारों अवस्था के साथ कैसा जिएगा उसका व्यवस्था है | इसके लिये मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद प्रस्तुत है | मानव ही समझदार होने का एकमात्र इकाई है | समझदारी के पश्चात ही मानव प्रमाणित होता है | आचरण के रूप में समझदारी आचरण में नहीं आएगा तब तक मानव सुना है, सुना हुआ को बताता है | मध्यस्थ दर्शन सुनाता भी है, समझाता भी है |

सुनने के रूप में पढ़ना होता है | शब्दों के अर्थ रूप में समझना होता है; जिसको भाव कहा जा सकता है, मूल्य कहा जा सकता है | इस क्रम में मानव विद्वान हो सकता है | तर्क विहीन मर्यादापूर्ण विधि से समझदार होने की स्थिति में मानव अपना उपयोगिता को सिद्ध कर सकता है | अपना उपयोगिता यही है- प्रमाण और परम्परा | प्रमाणित होना और परम्परा होना ही महत्वपूर्ण काम है | अभी तक विकल्प कुछ लोगों के बीच गया है | इसका लोकव्यापीकरण होना बहुत आवश्यक है जिसके लिये योग्य संस्थाएं तीन हैं | U.N.O.(संयुक्त राष्ट्र संघ), ग्लोबल हार्मनी, ग्लोबल सिटिजन नाम की तीन संस्थाएं हैं | इन तीनों संस्थाओं का एक दूसरे के पूरक होने से संसार का कल्याण हो सकता है | अभी का स्थिति में U.N.O. के पास धन है | बाकी दोनों संस्थाओं के पास कितना साधन है हम नहीं जानते, खुद बताएंगे | इस क्रम में यदि हम आगे बढते हैं, U.N.O. सम्मत संस्था है वर्तमान स्थिति में |

निर्भ्रम विचार के भूखे बाकी दोनों संस्था को देखा जा सकता है | ये तीनों संस्थाएं एक दूसरे के पूरक होना आवश्यक है | पूरकता का मतलब है एक दूसरे के लिये समर्थक होना, पोषक होना, सुधारक होना | विकल्प के अनुसार प्रमाण ही एकमात्र विकल्प है | प्रमाण आचरण के रूप में ही होता है | मच्छर से हाथी तक, मक्खी से बाघ तक सबका आचरण निश्चित है | मानव का आचरण निश्चित नहीं है | अभी कुछ कहता है, अभी और ही कर देता है | ये भ्रम का आधार है, भ्रमित शिक्षा

का कारण है | शिक्षा वास्तविक होना बहुत आवश्यक है | वास्तविकता यही है, जीवन में प्रमाणित हो जाय | प्रमाणित होने का स्वरूप आचरण में होना है | आचरण परम्परा बनना है | इसी क्रम में हम आगे बढ़ सकते हैं अन्यथा कुंठित रहेंगे ही | सुन्दर धरती को खत्म करके दूसरे धरती पर जाने की कोशिश भ्रमित कार्य के अलावा और क्या है? दूसरे धरतियां कोई ऐसा नहीं हैं भूगोल में, सौरव्यूह में जिसमें मानव आश्वस्त हो जाय | मानव का आश्वस्तीकरण इसी धरती पर है | हर व्यक्ति मंगल पर जाएगा नहीं; जो नहीं जाएगा, उनका क्या गति होगा?

चन्द्रमा पर जो कोई नहीं जाएगा, उनका क्या गति होगा? व्यापार विधि से चन्द्रमा को बेच चुके, अब मंगल को बेंचेगे | पैसे का खेल | पैसे के आधार पर, जो दे सकते हैं वो खरीदेंगे | इस क्रम में मानव अनिश्चयता के चपेट में आ चुका है | इसी क्रम में विकल्प पैदा हुआ | विकल्प विधि से निश्चयता आती है, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में | इसको भले प्रकार से हर व्यक्ति जांच सकता है, निश्चय कर सकता है, जी सकता है, परम्परा बना सकता है | जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज